|  |  |  |
| --- | --- | --- |
| **Ενότητα 11η** | | |
|  | **Αρχαίο κείμενο** | **Μετάφραση** |
|  | Ἀλέξανδρος δὲ, ἵνα ἡ μάχη συνέβη |  |
|  | καὶ ἔνθεν ὁρμηθείς |  |
|  | ἐπέρασεν τὸν Ὑδάσπην ποταμὸν |  |
|  | ἔκτισεν πόλεις. |  |
|  | Καὶ τὴν μὲν ὠνόμασε Νίκαιαν |  |
|  | ἐπώνυμον τῆς νίκης τῆς κατ’ Ἰνδῶν, |  |
|  | τὴν δὲ Βουκεφάλαν |  |
|  | ἐς τὴν μνήμην τοῦ ἵππου τοῦ Βουκεφάλα, |  |
|  | ὅς ἀπέθανεν αὐτοῦ |  |
|  | γενόμενος καματηρὸς ὑπὸ καύματός τε καὶ ἡλικίας, |  |
|  | πολλὰ δὲ πρόσθεν ξυγκαμών τε |  |
|  | καὶ συγκινδυνεύσας Ἀλεξάνδρῳ, |  |
|  | ἀναβαινόμενός τε πρὸς μόνου Ἀλεξάνδρου, |  |
|  | ὅτι ἀπηξίου τοὺς ἄλλους πάντας ἀμβάτας, |  |
|  | καὶ μεγέθει μέγας καὶ τῷ θυμῷ γενναῖος. |  |
|  | Σημεῖον δὲ οἱ ἦν |  |
|  | κεφαλή βοός ἐγκεχαραγμένη, |  |
|  | ἐφ’ ὅτω λέγουσιν ὅτι ἔφερεν καὶ τὸ ὄνομα τοῦτο· |  |
|  | οἱ δὲ λέγουσιν |  |
|  | ὅτι λευκὸν σῆμα εἶχεν ἐπὶ τῆς κεφαλῆς, |  |
|  | μέλας ὤν αὐτὸς, |  |
|  | εἰκασμένον μάλιστα ἐς κεφαλήν βοός. |  |
|  | Οὗτος ὁ ἵππος ἀφανὴς ἐγένετο Ἀλεξάνδρω, |  |
|  | ἐν τῇ χώρα Οὐξίων, |  |
|  | καὶ Ἀλέξανδρος προεκήρυξεν ἀνὰ τὴν χώραν |  |
|  | ἀποκτενεῖν πάντας Οὐξίους, |  |
|  | εἰ μὴ ἀπάξουσιν αὐτῷ τὸν ἵππον. |  |
|  | Τοσήδε γὰρ σπουδή ἦν Ἀλεξάνδρω |  |
|  | ἀμφ’ αὐτόν. |  |